वाक्य

वाक्य की परिभाषा

दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, उसे वाक्य कहते हैं।

उदाहरण -

(क) सुनीता - राधा! क्या कर रही है।

राधा - सब्जी

उपर्युक्त वाक्य से यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि राधा क्या कर रही है। इसलिए हम इसे वाक्य नहीं कह सकते हैं।

(ख) सुनीता - राधा! क्या कर रही हो?

राधा - सब्जी काट रही हूँ।

इस वाक्य से अर्थ स्पष्ट है कि राधा सब्जी काटने का काम कर रही है। इसलिए यह पूर्ण वाक्य है।

वाक्य रचना के नियम :-

किसी भी वाक्य के निर्माण करने का एक नियम होता है, जिसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं -

कर्ता + कर्म + क्रिया + विशेषण।

वाक्य के अंग

वाक्य निर्माण के लिए कर्ता तथा क्रिया का होना आवश्यक है। ये दोनों ही वाक्य के अंग हैं। इनके बिना वाक्य पूरा नहीं हो सकता है।

उदाहरण -

(क) राहुल घर जा रहा है।

(ख) मोहित फल खा रहा है।

ऊपर लिखे गए दोनों वाक्यों में राहुल तथा मोहित कर्ता है, जाना, खाना क्रिया है तथा घर, फल क्रिया विशेषण हैं।

उद्देश्य -

इसके अन्तर्गत वाक्य का कर्ता तथा कर्ता के विशेषण आते हैं।

विधेय -

इसके अन्तर्गत कर्म तथा कर्म विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण आते हैं। कर्ता के विषय में कहे गए शब्द इसके अन्तर्गत आते हैं।

उदाहरण -

सौरभ क्रिकेट खेलता है।

उद्देश्य विधेय

यहाँ सौरभ (कर्ता) के विषय में कहा जा रहा है। इसलिए 'सौरभ' उद्देश्य है। 'खेलता है' क्रिया है तथा 'क्रिकेट' क्रिया विशेषण है। इसलिए दोनों विधेय है।

इसी प्रकार -

1. राधा बाज़ार जा रही है।

   उद्देश्य विधेय

2. लेखक प्रेमचंद ने समाज की सच्चाइयों को अपनी कहानियों का आधार बनाया।

   उद्देश्य विधेय

यहाँ लेखक शब्द कर्ता (प्रेमचंद) का विशेषण है अत: कर्ता विशेषण होने के कारण यह उद्देश्य है।

3. समाज सुधारक ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा विवाह का समर्थन किया।

उद्देश्य विधेय

कभी-कभी कर्ता तथा क्रिया के बिना भी वाक्यों की रचना की जा सकती है। परन्तु वह अपूर्ण वाक्य होता है। ऐसे वाक्यों का अर्थ उसके पहले के वाक्यों के आधार पर ही स्पष्ट हो सकता है।

कही-कही एक ही शब्द का प्रयोग भी किया जाता है; जैसे -

पिता	-	मोहन!
मोहन	-	क्या?
पिता	-	जाओ।
मोहन	-	कहाँ?
पिता	-	स्कूल।
मोहन	-	ठीक है।

परन्तु ऐसे शब्दों से भाव पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाता है। वाक्य के दृष्टिकोण से ये इस प्रकार से हो सकते हैं -

पिता	-	मोहन!
मोहन	-	क्या?

पिता	-	जाओ।
मोहन	-	कहाँ?
पिता	-	स्कूल।
मोहन	-	ठीक है।

वाक्य के भेद -

(क) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

(ख) रचना के आधार पर वाक्य भेद

(क) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद :-

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं -

(1) विधान सूचक वाक्य :- वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है, उन्हें विधान सूचक वाक्य कहते हैं;

जैसे - (1) अकबर एक मुगल शासक था।

(2) शाहजहाँ जहाँगीर का पुत्र था।

(3) सूरज दिन में उगता है।

(4) ये मेरी माँ है।

(2) नकारात्मक (निषेधवाचक) वाक्य :- जिन वाक्यों से कथन का निषेध (नहीं) करने का बोध हो, उन्हें नकारात्मक वाक्य कहते हैं;

जैसे - (1) मैं कल स्कूल नहीं जाऊँगा।

(2) रमेश खाना नहीं खा रहा है।

(3) तुम कल मेरे घर नहीं आना।

(3) आज्ञा सूचक वाक्य :- वह वाक्य जिसके द्वारा किसी प्रकार की आज्ञा दी जाती है, उन्हें आज्ञा सूचक वाक्य कहते हैं;

जैसे - (1) कृपया मुझे अंदर आने दीजिए।

(2) अंदर आ जाओ।

(3) चुप हो जाओ।

(4) कृपया चुप हो जाइए।

4. प्रश्नवाचक वाक्य :- वे वाक्य जो प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किए जाते हैं; अर्थात् किसी भी प्रकार के प्रश्न का बोध कराने वाले वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे - (1) तुम घर कब जाओगे?

(2) नमन कैसा है?

(3) वह कल स्कूल आया था या नहीं।

(4) शोभा कहाँ जा रही है?

5. इच्छावाचक वाक्य :- जिन वाक्यों में वक्ता अपने लिए अथवा किसी दूसरे के लिए इच्छा प्रकट करता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे - (1) मैं आम खाना चाहता हूँ।

(2) तुम परीक्षा में ज़रूर उत्तीर्ण हो जाओगे।

(3) तुम्हारे पैसे तुम्हें वापस मिल जाएँगे।

6. संदेहवाचक वाक्य :- जिन वाक्यों में वक्ता संदेह के भाव को प्रकट करता है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे - (1) हो सकता है इस साल गर्मियों की छुट्टियों में हम मसूरी जाएँ।

(2) शायद राहुल की माताजी बिमार हैं।

(3) शायद वह कल स्कूल न जाए।

7. विस्मयादि बोधक वाक्य :- ऐसे वाक्य जिनसे हर्ष, विस्मय, शोक आदि के भाव प्रकट हो, उन्हें विस्मयादि बोधक वाक्य कहते हैं;

जैसे - हे भगवान! ये क्या हो गया।

हाय! ये चोट कैसे लगी।

वाह! आज मौसम कितना अच्छा है।

8. संकेतवाचक वाक्य :- वे वाक्य जहाँ किसी न किसी शर्त को पूरा करने की ओर संकेत किया गया हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे - (क) अगर तुम चोरी नहीं करते तो पकड़े नहीं जाते।

(ख) अच्छी तरह से पढ़ोगे तो ज़रूर पास हो जाओगे।

रचना के आधार पर वाक्य भेद :- रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं -

1. सरल वाक्य :- जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं;

जैसे - (क) मैं कल स्कूल जाऊँगा।

(ख) कल विकास का जन्मदिन है।

2. संयुक्त वाक्य :- जिन वाक्यों में एक से अधिक वाक्य जुड़े होते हैं, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं;

जैसे - (क) तुम घर जाओ और मैं बाजार जाता हूँ।

(ख) मोहन की माँ बीमार है इसलिए मैं उन्हें देखने उनके घर जा रहा हूँ।

3. मिश्र वाक्य :- संयुक्त वाक्य में प्रत्येक उपवाक्य स्वंतत्र होते हैं। लेकिन मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य तो स्वंतत्र होता है परन्तु बाकी के उपवाक्य स्वंतत्र उपवाक्य पर आश्रित होते हैं। ये आश्रित उपवाक्य को जोड़ने के लिए - जोकि, क्योंकि, कि, जो जैसे शब्दो का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण - (क) मैं आज स्कूल नहीं जा सका क्योंकि बारिश हो रही थी।

(ख) अगर तुम कल स्कूल नहीं जाओगे तो मैं भी नहीं जाऊँगा।

वाक्य के रूप :- वाक्य के दो रूप होते हैं -

(क) शुद्ध

(ख) अशुद्ध

अशुद्ध वाक्य :- अकसर वाक्य रचना में, बोलचाल की भाषा में कुछ अशुद्धियाँ देखने को मिलती है;

जैसे –

(क) आप जाओ।

(ख) तू जल्दी स्कूल जा।

(ग) मेरे को राधा के साथ खेलना है।

शुद्ध रूप :- (क) आप जाइए।

(ख) तुम जल्दी स्कूल जाओ।

(ग) मुझे राधा के साथ खेलना है।